OM 17 EDITED_Page 1 and 2 11-11-2014 15:47 Page 12

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान–गुणों का दान करने वाली आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच- ''बापदादा के मुरब्बी बच्चों के हर कर्म की रेखा से अनेकों के कर्मों की रेखा बदलती है। तो हर कर्म की रेखा से अनेकों की तकदीर की लकीर खींची। तो जहाँ-जहाँ जाते हैं अपने कर्मों की कलम से अनेकों की तकदीर की लकीरें खींचते जाते। तो कदम अर्थात् कर्म ही मुरब्बी बच्चों के तकदीर की लकीर खींचने की सेवा के निमित्त बना। कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। अनन्य बच्चों का हर कर्म श्रेष्ठ होता है। उनमें विशेषता यह होती है कि उनके हर कर्म द्वारा, अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। जो गायन भी है कि जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख सब करेंगे। ऐसे उनके हर कर्म अनेक आत्माओं को एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जाएंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। इसको कहा जाता है- समर्थ कर्म। ऐसे कर्म वाला सदा स्वयं से संतुष्ट होगा और हर्षित होगा।''

मनन-चिन्तन - कर्म-आत्मा का दर्शन कराने वाला दर्पण है। श्रेष्ठ कर्म ही ऊँच तकदीर बनाने का साधन है। सदा किन महावाक्यों को सामने रखें जो कर्म पर अटेन्शन हो। ब्रह्मा बाबा एवं दादियों ने कैसे निमित्त, निर्माण व निरहंकारी होकर कर्म करना सिखाया है, इस पर विचार सागर मंथन करें।

योगाभ्यास - सूक्ष्म वतन में बापदादा को सतगुरु के रूप में सम्मुख रख महान व श्रेष्ठ कर्म करने की समझ व शक्ति ले रहे हैं... बापदादा को दिन भर में बीच-बीच में एवं रात को सोने से पहले धर्मराज के रूप में सम्मुख रख अपना पोतामेल देते रहें..बापदादा के सम्मुख प्रतिज्ञा को दोहराएं कि संगमयुग में कोई भी ऐसा कर्म हमसे नहीं होगा जो ब्राह्मण कुलभूषण के योग्य नहीं है..।

व्यवहार में - ना खुद को देह समझकर व्यवहार में आएं और न दूसरों को देह समझकर व्यवहार में आएं,हम शुद्ध करनहार आत्मा हैं, करनकरावनहार बाबा है।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - हर पल कर्म हो रहा है...हर पल हमारा जन्म-जन्म का भाग्य बन रहा है या बिगड़ रहा है...संगमयुग की विलक्षण घड़ियां यूं ही न बीत रही हों इसका पूरा-पूरा अटेन्शन रहे...जैसे सीमा पर दुश्मनों के सम्मुख खड़ा फौजी सजग व सतर्क रहता है उसी प्रकार हम तीव्र पुरुषार्थियों के लिए यह कर्मक्षेत्र ही युद्ध स्थल है और हमें हर पल सजग व सतर्क रह माया दुश्मन के वार को पहले से समझकर विफल कर देना है, विघ्न आने ही नहीं देना है।

स्वमान–मैं देह रूपी रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हूँ।

शिवभगवानुवाच - ''सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को 'सारथी और साक्षी' समझ चलना। आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस रथ के सारथी हो। रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हो। यह स्मृति स्वत: ही इस रथ अथवा देह से न्यारा बना देती है। देहभान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वत: ही हो जाते हैं। सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानी। क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की।''

योगयुक्त होने की विधि - 1. जैसे देह को अधीन कर शिवबाबा प्रवेश होते अर्थात् सारथी बनते हैं, देह के अधीन नहीं बनते। इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान इस देह में स्थित होने का अनुभव करें...चलते-फिरते कर्म करते भी यह चेक करें कि मैं सारथी अर्थात् सर्व को चलाने वाली न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ...बीच-बीच में ये चेक करें। सारा दिन यदि यूं ही बीत गया तो बीता हुआ समय सदा के लिए कमाई से गया। यह स्वत: नैचुरल संस्कार बनाओ। कौन-सा? चेकिंग का।

2. सारथी स्वत: ही साक्षी होकर कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे...साक्षी बन देखने, सुनने, करने सबमें सबकुछ करते भी निर्लेप रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे।

स्व-चेकिंग - 'सारथी' किसी भी कर्मेन्द्रिय के वश नहीं हो सकते। माया के वार करने की विधि यही होती है कि कोई-न-कोई स्थूल कर्मेन्द्रियों अथवा सूक्ष्म शक्तियां - 'मन-बुद्धि-संस्कार' के परवश बना देती हैं। आप सारथी आत्माओं को जो महामंत्र, वशीकरण मंत्र बाप से आपको मिला हुआ है उसको परिवर्तन कर वशीकरण के बजाय वशीभूत बना देती है। एक बात में भी वशीभूत हुए तो सभी भूत प्रवेश हो जाते हैं। इसलिए सारथी पन का भान विस्मृत न हो...।

योग मन के...

- पेज 1 का शेष

भाव है जो कि उन्नति करता है। हरेक धर्म के मूल में दया का ही मूल मंत्र है।

उक्त विचार चाइना से आये बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध योगी मा.जीजिंग ने ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर में आयोजित कार्यक्रम 'द पावर ऑफ कम्पशन' में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि योग मन के परिवर्तन की एक अवस्था है, हमारे विचार प्रकृति के तत्वों को भी प्रभावित करते हैं। अगर हम अपने परिवार एवं अपने साथियों को बदलना चाहते हैं, तो पहले हमें स्वयं के मन को बदलने की ज़रूरत है, जिसके लिए योग बहुत आवश्यक है। मैं यहाँ कुछ सीखने के लिए आया हूँ, मैं अपने को सदा विद्यार्थी ही समझता हूँ। जो कुछ भी मुझे अपने जीवन में अनुभव हुआ, उसे आपके साथ बाँटकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं यहाँ के शक्तिशाली वातावरण से एक ऐसी ऊर्जा लेकर जा रहा हूँ जिसे कि पूरे चाइना में फैलाऊँगा। योग का अभ्यास करवाते हुए उन्होंने कहा कि जब साँसें लेते हैं, तो सारे यूनिवर्स की ऊर्जा मेरे अंदर प्रवेश कर रही है और जब साँसें छोड़ते हैं, तो मेरे अंदर की नकारात्मकता पूर्णरूप से बाहर निकल रही है।

मा.जीजिंग एरोनोटिक्स के क्षेत्र में भी अपनी सेवायें दे चुके हैं, 1998 से वे बौद्ध धर्म में एक योगी अथवा सन्यासी के रूप से कार्य कर रहे हैं। सन् 2006 से बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करने के लिए चीन से बाहर भारत, केनिया और अमेरिका का भ्रमण कर चुके हैं। वर्तमान समय चाइना के दस लाख से भी अधिक लोग पंजीकृत रूप से उनके मिशन से जुड़े हैं।

ओ.आर.सी की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कहा कि आज व्यक्ति बाहरी रूप से स्वयं को सम्पन्न बनाने में लगा हुआ है, लेकिन अंदर से खाली होता जा रहा है। हमें स्वयं को अंदर से भरने की आवश्यकता है, वो भी तभी संभव है जब हम स्वयं का चिन्तन करेंगे और वास्तविक स्वरूप को पहचान कर उसमें स्थित होने का प्रयास करेंगे। कार्यक्रम में 350 से अधिक लोगों ने भाग लिया, जिसमें कि 260 मेहमान चाइना से आये हुए थे। चाइना से आये हुए मेहमानों ने अपनी भाषा में सुंदर गीत एवं नृत्य भी प्रस्तुत किए।

फागी-राजापार्क(जयपुर)। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् एस.डी.एम. राजेश कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता।

रावर्ट्सगंज-(उ.प्र.)। अध्यात्मिक ज्ञानचर्चा के बाद अपर जिला मजिस्ट्रेट मनीलाल यादव को लकी कार्ड निकलवाते हुए ब्र.कु. सुमन।

गोपालगंज। जिलाधिकारी कृष्ण मोहन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंगूर।

सेक्टर 55-बल्लभगढ़। ज्ञान चर्चा के बाद समूह चित्र में हरियाणा सरकार के श्रम राज्य मंत्री पण्डित शिव चरण शर्मा, ब्र.कु.सुशीला तथा अन्य।

दिल्ली-लाजपत नगर। आध्यात्मिक कार्यक्रम में विधायक तरविन्दर सिंह मारवाह अपनी शुभकामनाएं देते हुए। साथ हैं ब्र.कु. चन्द्र तथा अन्य।

बदिया-गुलरिया(नेपाल)। साप्ताहिक कोर्स करने के बाद समूह चित्र में जिला अदालत के न्यायाधीश वसन्तराज पौडेल, सहायक डी.एम. एकदेव अधिकारी, कोष तथा लेखा नियंत्रक रुकमागत भटराई, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

चंद्रपुर-भद्रावती। चैतन्य नवदुर्गा झाँकी के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में वाजपयी जी,महाप्रबंधक ऑर्डिनेन्स फैक्ट्री, ब्र.कु. कुन्दा, ब्र.कु. दीपक तथा अन्य।

दिल्ली-शक्ति नगर। ज्ञान चर्चा के बाद समूह चित्र में नगर निगम परिषद् के वित्तिय सलाहकार पी.के. सिह,आई.डी.ए.एस., ब्र.कु. गीता, ब्र.कु.गणेश एवं ब्र.कु.अजली।

रेनुकूट-उ.प्र.। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाने के बाद समूह चित्र में रिहन्द बांध के पूर्व एन.आर. एन.एस.यादव, ब्र.कु. राजकन्या तथा अन्य।